उपसंहार

साहित्य मानव की सर्वश्रेष्ठ व शाश्वत सृष्टि है जो उसे दृष्टि भी देती है। साहित्य में मानव के भाव और विचार उसके जीवन का यथार्थ और आदर्श, समाज और संस्कृति, सुख और संघर्ष आदि व्यक्त होते हैं। उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, यात्रा-साहित्य आदि विभिन्न विधाओं में रचनाएं कर अनेक साहित्यकारों ने पिछली कई सदियों से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। इन विधाओं में उपन्यास तथा कहानी पाठकों का मन बहलाते हैं और बौद्धिक विकास भी करते हैं। यह दोनों सर्वाधिक लोकप्रिय विधाएं हैं। इसे कथा साहित्य कहा जाता है।1960 के बाद उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा आदि कई लेखिकाओं ने साहित्य में अपना योगदान दिया। "मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध एक अध्ययन" इस विषय को स्पष्ट करते हुए समाज में मूल्यों के प्रचार-प्रसार तथा मूल्य परिवर्तन एवं विघटन का अध्ययन किया है। मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में समाजशास्त्र, राजनीति, आर्थिक स्थिति, नैतिकता से जुड़े अनेक विषयों का अध्ययन हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा पर भी इसका बड़ा प्रभाव दिखाई देता है। लेखिका के जीवन पर बुंदेलखंड के आंचल का प्रभाव अधिक है। इसका कारण यह है कि इन्होंने स्वंय इस क्षेत्र में जीवन बिताया है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में ग्रामीण तथा शहरी दोनों परिवेशों को देखा जाता है। लेखिका ने अपनी रचनाओं की रचना अपने अनुभव पर लिखी हैं। इसीलिए इनकी रचनाओं में जीवन की वास्तविकता का चित्रण हुआ है। घटनाओं की सत्यता और पात्रों की सजीवता यह उनके साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य की पृष्ठभूमि में बुंदेलखंड प्रदेश है। विवाह के बाद दिल्ली में रहने के कारण साहित्य पर महानगरीय परिवेश का प्रभाव पड़ा है। शहर में रहते हुए भी वह गांव की ऊर्जा को भूल नहीं पाई। उनके उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन अत्यंत सजीव रूप में चित्रित हुआ है। गांव की संस्कृति में परिवर्तन आ रहा है। शहर की भौतिकवादी सभ्यता का प्रभाव पड़ने लगा है। लेखिका ने इस पर अपने साहित्य के माध्यम से खेद भी व्यक्त किया है। इन्होंने अपने साहित्य में समाज तथा देश के लोगों की राजनीतिक स्थितियों का

चित्रण किया है। समाज में जाति व्यवस्था की दाहकता, वर्ग संघर्ष, पारिवारिक स्थिति का चित्रण हुआ है। लेखिका के विचार ग्रामीण जीवन तथा स्त्रीवादी विचारों से प्रभावित हैं। कथा साहित्य के माध्यम से समाज द्वारा उपेक्षित पीड़ितों के जीवन की सच्चाई को सामने लाया है। प्रेमचंद तथा रेणु के बाद मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण जीवन को अपने साहित्य का केंद्र बनाया है। ग्रामीण जीवन में आज भी अशिक्षा, अज्ञान, स्त्री-पुरुष भेदभाव, अंधविश्वास, शकुन-अपशकुन दिखाई देता है। सरकार के द्वारा चलाई गई ग्रामीण विकास की योजनाएं, पंचायतराज कितना खोखला है? यह इनके साहित्य से स्पष्ट होता है।

इनके समस्त साहित्य को पढ़कर ज्ञात होता है कि नारी पात्र अत्यंत सशक्त रूप लेकर उभरे हैं। नारी पात्रों की संख्या अधिक है तथा पुरुष पात्र कम हैं। अपनी आत्मकथा को लेकर साहित्य जगत में काफी चर्चा में आई हैं। कथा को बेहद आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करना उनकी विशेषता है। लेखिका का विवाह के प्रति दृष्टिकोण बदला हुआ है। पुष्पा के अनुसार इस समस्या का रूप बदल चुका है। मूल्य का स्वरूप प्राचीन समय से ही हमारे समाज में व्याप्त रहा है लेकिन साधारण मनुष्य इससे परिचित नहीं था। जैसे-जैसे मूल्य का विकास होता गया, वह मूल्य को समझने लगा। धीरे-धीरे मूल्य एक पूर्ण विकास का रूप धारण कर गए। मूल्य बीसवीं शती का एक चर्चित शब्द माना गया है। बोलचाल की भाषा तथा अर्थशास्त्र में 'मूल्य' शब्द मोल, कीमत के अर्थ में प्रस्तुत होता है। साहित्य में 'मूल्य' जीवनमूल्य अर्थात मानव समाज के आचरण में सर्वस्वीकृत कल्याणकारी तरीके हैं। इनका पालन करके मनुष्य और उसका समाज नैतिक पतन से बच सकता है। मूल्यों का विकास समाज के साथ हुआ है। इसे समाज में व्यक्ति की सांस्कृतिक धरोहर स्वीकारा गया है। जिसके अनुसार समाज में प्रत्येक क्रिया-कलाप तथा व्यवहार होता है। मूल्यों के बिना समाज में व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है। यह समाज में मनुष्य की पहचान बनाने में सहायता करता है। मनुष्य पशु मात्र से उच्चस्तरीय, संतुष्ट जीवन जी सकता है। परंपरा संस्कार, प्रगतिशील सोच और विवेक से मूल्य निर्मित होते हैं और विकसित होते हैं। मूल्य व्यक्ति की रक्षा के लिए मानदंड होते हैं। इनका पालन न करने से मूल्य टूटने लगते हैं। मानवीय आचरण के मानक होते हैं मूल्य। मूल्य व्यक्ति को समाज के नियमों के बारे में जागरूक करते हैं। समाज में रहते हुए मनुष्य

परस्पर प्रेमभावना, आचार-व्यवहार जैसे मूल्यों का प्रयोग करता है। मूल्य व्यक्ति को मानवीय जीवन का आधार प्रदान करते हैं। जिसके लिए व्यक्ति और समाज जीवित रहता है तथा ज़रूरत के समय संघर्ष को भी तैयार रहता है। मूल्यों का आदर्शों के साथ निकट का संबंध है। ये विशिष्ट मानव समाज की संस्कृति के द्योतक भी होते हैं। साहित्य संस्कृति का अंग होने के कारण साहित्य और मूल्यों का घनिष्ठ संबंध है। प्रत्येक समाज में कुछ मान्यताएं अवधारणाएं विद्यमान होती हैं। समय के अनुसार यही मान्यताएं स्थिर होकर मूल्य बनती हैं। साहित्य जिन मूल्यों का मंडन या खंडन करने हेतु अपनी रचना करता है, वही उसका मूल्य बोध है। शोध प्रबंध में मूल्य शब्द की व्याख्या अनेक दृष्टियों से की गई है। आज के समय में मूल्य अपनी एक विशेष पहचान लिए हुए है। साहित्य के क्षेत्र में इसका अलग अर्थ लिया हुआ है। अतः मूल्य विभिन्न ज्ञानानुशासनों द्वारा विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया है। विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग तरीके से मूल्यों के वर्ग बनाए हैं। इनमें प्रमुख वर्ग शाश्वत और परिवर्तनीय मूल्यों का है। साहित्य जीवन मूल्यों की उपलब्धि का सशक्त आधार है। इसी कारण साहित्य और मूल्यों को अलग नहीं किया जा सकता। दोनों का उद्देश्य मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाना ही रहा है। साहित्य में मूल्य बोध का प्रथम स्रोत व्यक्ति को माना गया है जो साहित्यकार की कृति से प्रभावित होकर आनंदानुभूति महसूस करता है। यही आनंदानुभूति साहित्य में मूल्य कही जाती है। साहित्यकार अपने साहित्य में केवल नैतिक मूल्यों को ही मान्यता नहीं देता बल्कि वह भौतिक और साधनात्मक मूल्यों का भी प्रतिपादन करता है। इसी कारण साहित्य के मूल्य और जीवन मूल्य भी नहीं है। दोनों का उद्देश्य मनुष्य को आनंद प्रदान करना है। अत: मूल्य मानव जीवन से उत्पन्न होकर सीधे साहित्य को प्रभावित करते हैं। लेखिका ने सामाजिक मूल्य बोध में वैयक्तिक, दांपत्यगत, पारिवारिक, परंपरागत मूल्य तथा नारी जीवन से जुड़ी नई मान्यताओं का उल्लेख किया है। उपन्यासों में पात्र अपनी इच्छाओं तथा आवश्यकता को प्रधानता देते देखे गए हैं। इसके साथ ही कुछ पात्र अपनी इच्छाओं को मारकर सामाजिक हित के लिए भी कार्य करते है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में एक भाई अपनी बहन के लिए अच्छा वर ढूंढने में असमर्थ दिखाया है तथा विवाह के खर्च से भी स्वयं का मुंह मोड़ लेता है। जिस मां-बाप ने अपने गहने तक

बेचकर उसे पढ़ाया तथा सरकारी नौकरी लगवाई, जिसके पीछे मां-बाप का उद्देश्य था कि अब अजीत घर की जिम्मेदारियों को संभाल लेगा। उपन्यास में पात्रों के माध्यम से वर्तमान स्थिति का भी चित्रण किया है। वर्तमान युग में भी युवा पीढ़ी अपने तक ही सीमित रह गई है। किसी को अपने कर्तव्य का ध्यान नहीं है। हम सभी युवा पीढ़ी को इस श्रेणी में नहीं रख सकते। आज भी सौ प्रतिशत में से तीस प्रतिशत युवा पीढ़ी अपनी जिम्मेदारियों को निभाती देखी जा रही है। उपन्यास में उर्वशी के पड़ोसी दादा, उसके लिए अच्छा वर ढूंढ कर लाते हैं तथा विवाह में भी उर्वशी के बाप की मदद करते हैं।

उपन्यास 'चाक' में स्वाभिमान वैयक्तिक मूल्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष देखने को मिला है। उपन्यास के पात्र भंवर की मास्टर पद के लिए नियुक्ति होती है लेकिन एक ही स्कूल में एक ही पद के लिए दो अध्यापकों की नियुक्ति की जाती है। यहां पर एक अध्यापक की नियुक्ति योग्यता के आधार पर की जाती है तथा दूसरे की सिफ़ारिश के बल पर हुई थी। भंवर दूसरे व्यक्ति की नियुक्ति को आदर्श नहीं मानता है। वह ऐसी जगह पर नौकरी करना अपने स्वाभिमान को चोट लगना जैसा मानता है। भंवर ऐसी नौकरी को छोड़ देता है तथा इससे कहीं अच्छा अपनी खेती करना अधिक श्रेष्ठ समझता है। उपन्यास में बिना पैसे अर्थात दहेज़ के गांव का प्रधान अपने बेटे की शादी करवाता है। ऐसे में प्रधान ने गांव में आदर्श स्थापित किया है। उसकी वैयक्तिक इच्छा होती है कि जब लड़की इतनी पढ़ी-लिखी है तो दहेज़ किस बात का? उपन्यास में दांपत्यगत संबंध भी कहीं बनते तथा कहीं पर बिगड़ते दिखाए गए हैं। 'झूलानट' उपन्यास में शीलो इसका उदाहरण है। शीलो एक अनपढ़ स्त्री है। वह किसी दांपत्यगत मूल्य को नहीं समझती लेकिन अपने पति के सामने झुकती नहीं है। परित्यक्ता होकर भी अपने घर तथा ज़मीन को नहीं छोड़ती। सुमेर ने शीलो को उसके छोटे कद तथा काले रंग के कारण त्याग दिया है। वह शहर में किसी दूसरी औरत से शादी कर लेता है। इस तरह उपन्यास के पात्रों के दांपत्य संबंधों में प्रेम तथा विश्वास की कमी देखी गई है। आज का व्यक्ति किसी की सुंदरता पर रिझता है। प्रेम और समर्पण का उसके जीवन में कोई महत्व नहीं है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में दांपत्य संबंधों का रूप गिरता हुआ ही दिखाया गया है। प्रत्येक पात्र अपने ही अहंकार के कारण अपने रिश्तो को निभा नहीं पाते। कोई सुंदरता के

कारण, कोई अपने पुरुषत्व के बल पर अपनी पत्नी को नीच दिखाता रहता है। पति-पत्नी के रिश्ते में समझौता कहीं भी दिखाई नहीं दिया है। एक-दूसरे पर हावी होते ही दिखाया है। दांपत्यगत मूल्य विघटित होते देखे गए हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से पारिवारिक मूल्यों का वर्णन तो किया है साथ ही उनके विघटन और परिवर्तन की स्थिति को भी उजागर किया है। उपन्यास में भाई ही अपनी सौतेली बहन का बलात्कार कर देता है। उपन्यास की पात्र रेशमी का बाप उसकी मां के मायके चले जाने पर रेशम अर्थात अपनी बेटी का बलात्कार करता है तथा किसी अन्य को न बताने की धमकी देता दिखाया गया है। लड़की को ससुराल में उसकी पूरी की पूरी महीने की तनख्वाह लेने पर भी चैन से जीने नहीं दिया जाता है। उसके सास-ससुर उसको ड्यूटी करने पर भी शक की निगाह से देखते हैं। इस तरह उपन्यास में लेखिका ने पारिवारिक मूल्य विघटन को दर्शाया है। एक बेटी जिसका हितकारी बाप से बड़ा कोई नहीं होता, वही बाप कथा साहित्य में राक्षस की भूमिका अदा करता है। एक स्त्री आत्मनिर्भर भी है, उसे फिर भी शक की निगाह से देखा जाता है। पारिवारिक मूल्यों का तब तक ही महत्व होता है, जब तक परिवार के सदस्य प्रेम और विश्वास के साथ घर में रहते हैं और विश्वास तथा प्रेमभाव का समापन मूल्य विघटन की स्थिति उत्पन्न करता देखा गया है। पारिवारिक संबंधों में आया ऐसा बदलाव परिवार के अर्थ को ही बदल देता है। लेखिका ने उपन्यास साहित्य में परंपरागत मूल्य में विवाह संस्कार को महत्वपूर्ण माना है जो स्त्री-पुरुष को एक सूत्र में पिरोता है लेकिन कहीं-कहीं पर स्त्री-पुरुष की परंपरागत छवियां टूट रही हैं। विवाह मात्र समझौता बनकर रह गया है। लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में पात्रों के माध्यम से परंपरागत मूल्यों का नकारात्मक रूप दिखाया है, वहीं पर इसका सकारात्मक रूप भी पेश किया है। उपन्यास में गजरा अपने पति द्वारा त्याग दी जाती है लेकिन वह ससुराल में रहकर सास-ससुर की सेवा करती है। गजरा अपनी विदाई के समय बाप द्वारा दी गई शिक्षा का भरपूर पालन करती है। शादी के बाद बेटी का घर उसका ससुराल ही होता है जिसका उदाहरण गजरा के माध्यम से पेश किया गया है। गजरा का मानना है कि विदाई के बाद बेटी पराई हो जाती है। उपन्यास में समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण बदला हुआ सामने आया है। नारी को पुरुष से कम नहीं माना जाता है।

नारी विधवा होने पर भी किसी गैर पुरुष से शारीरिक संबंध बनाती है तथा गर्भ न रह जाए इसके लिए गोलियां खाती है। उपन्यास में नारी के चलायमान मन को दिखाया गया है। वह अपने प्रति जागरूक होती दिखाई है।

नारी अपने सपनों को पूरा करने के लिए शादी के मंडप को त्याग देती है। इला की विवाह में रुचि न होने के कारण घर से भाग जाना। वह पुलिस में भर्ती होकर समाज में सुधार करने की इच्छा से शादी को नकारती दिखाई गई है। उपन्यास में रेशम पति के मर जाने पर अपने जेठ से विवाह नहीं करती बल्कि इसका विरोध करती दिखाई गई है। रेशम का मानना है कि जिस इंसान के प्रति दिल में इज़्ज़त नहीं है, उसके साथ ज़िन्दगी नहीं निभा पाएगी। उपन्यास की नारी अपने जीवन का सफर स्वयं तय करना चाहती है। नारी के आत्मविश्वास को व्यक्त किया गया है। नारी अपनी ज़िन्दगी के फैसले स्वयं तय करती हुई दिखाई गई है। आर्थिक मूल्य बोध में अर्थ को प्रधानता देते पात्रों का चित्रण किया गया है। पात्र पैसे के लिए अपने परिवारिक संबंधों को भी दांव पर लगा देते हैं। पात्रों द्वारा पैसे के लिए बहन का विवाह तीन बच्चों के पिता से करवा दिया जाता है। यह विवाह दो शरीर तथा आत्माओं का मेल नहीं होता बल्कि एक सौदा किया जाता है। भाई अपनी बहन के विवाह के बदले में दस बीघा ज़मीन अपने नाम लिखवा लेता है। तभी जाकर उर्वशी को विदा किया जाता है। उपन्यास में क्रेशर पर काम करने वाले मज़दूरों का भी चित्रण किया गया है। यह मज़दूर अपने साथ अपने बच्चों को भी काम में लगाते हैं ताकि पैसा कमा सकें। इनका मुख्य उद्देश्य पैसा कमाना होता है। इनके जन्म के समय ही इनका काम करना तय हो जाता है। उपन्यास की नायिका ऐसे बच्चों को स्कूल भेजना चाहती है लेकिन इनके लिए मज़दूरी करके पैसा कमाना ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। लेखिका ने इन पात्रों के माध्यम से देश में अर्थ की प्रधानता को व्यक्त किया है। व्यक्ति पैसे को सामने रखकर अपने रिश्ते नाते तथा भविष्य को भूलता दिखाया है। आर्थिक समृद्धि की लालसा के कारण आज की युवा पीढ़ी अपने आर्थिक मूल्यों को अनदेखा कर रही है। लेखिका ने पैसे को प्रधानता देते पात्रों की मानसिकता का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

उपन्यास में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी का चित्रण किया है। बताया है कि आत्मनिर्भर नारी परिवार तथा समाज में सम्मान की हकदार होती है। उपन्यास में नेहा एक माहिर आंखों की डॉक्टर होती है। नेहा के ससुर उस पर गर्व अनुभव करते हैं। वे किसी पार्टी में जाकर अपने बेटे की जगह बहू का परिचय करवाते नज़र आते हैं। चाहे इस प्रशंसा में स्वार्थ भी हो लेकिन यह सब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी ही प्राप्त कर सकती है। इसके साथ ही गिरते अर्थात विघटित होते आर्थिक मूल्य में आत्मनिर्भर नारी अपने रिश्तो को पहल न देती हुई दिखाई है। डॉ. आभा अपने ससुराल तथा पति को छोड़कर अस्पताल में एक कमरे में रहती है। उसके लिए अपने रिश्ते न के बराबर हैं तथा अपना काम मुख्य पर। उपन्यास में इला भी अपने गांव तथा मां-बाप के सामने पुलिसकर्मी बनकर प्रशंसा की पात्र बनती है। इस तरह स्पष्ट है कि चाहे कोई भी हो, अगर नारी आत्मनिर्भर है तो हर क्षेत्र में सम्मान पा जाती है। नारी ने अपने हक, आदर्श तथा मूल्यों के लिए लड़ना सीख लिया है इसीलिए आज की नारी पुरुष से पीछे नहीं है। उपन्यास में मज़दूरों के आर्थिक शोषण को भी दिखाया गया है। मज़दूर दिन-रात मेहनत करते हैं लेकिन इन्हें पूरी मज़दूरी नहीं दी जाती। रात को दस पैसे इनके हाथ पर रख दिए जाते हैं। अगर यह लोग मज़दूरी नहीं करते तो मालिकों द्वारा पिटाई की जाती है। उपन्यास में मालिक वर्ग मज़दूरों का शोषण करता देखा गया है। यह गरीब जनता का फायदा उठाकर अपने काम को साधते देखे गए हैं। मज़दूर वर्ग इतनी मेहनत करता है लेकिन दो वक्त का भरपूर खाना भी नहीं जुटा पाता। लोगों की निर्धनता का मुख्य कारण इनका आर्थिक शोषण है। इनके लिए समाज का आर्थिक रवैया ज़िम्मेदार साबित होता है। वर्तमान समय को भी उपन्यास के माध्यम से दिखाया गया है। लोगों की आर्थिक असमानता आज भी बढ़ती जा रही है। आज का जो व्यक्ति धनी है तो वह और धनी होता जा रहा है तथा गरीब, अत्यंत गरीब। दिन-रात संघर्ष करने के बाद भी उपन्यास के पात्र अपनी बेटी का विवाह करने में असमर्थ दिखाए गए हैं। उपन्यास में एक लड़की के जन्म होने से ही विशेष जिम्मेदारी का प्रदर्शन होता है। उर्वशी स्वयं लड़की होने के कारण स्वयं को ही कोसती है। आर्थिक कारणों से यह बिगड़ते संबंध भारतीय संस्कृति में मूल्यहीनता पैदा कर रहे हैं। उपन्यास में अर्थ के प्रति लालसा बढ़ जाने के कारण सामाजिक संबंधों में तनाव

और संघर्ष की स्थिति ने मूल्यों को अत्यंत प्रभावित किया है। इसीलिए इस युग की समस्त समस्याओं में आर्थिक समस्या के संघर्ष को सर्वोपरि माना गया है। उपन्यास में पात्र पैसे के पीछे इस तरह भाग रहे है कि वह अपने रिश्तो को भूलते जा रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने मूल्यों पर आदर्शों की भी अवहेलना करने लगा है।

'इदन्नमम' उपन्यास में पात्र क्रेशर पर काम करते हैं। इतनी धूल मिट्टी में काम करने से मज़दूरों को सांस की बीमारी लग गई है। यह लोग अपने स्वास्थ्य को भी दांव पर लगा देते हैं लेकिन अपनी ज़रूरतों को फिर भी पूरा नहीं कर पाते हैं। उपन्यास में मज़दूर अपने पेट को भरने के लिए घास को उबालकर खाते देखे गए हैं। यह लोग इतने विवश है कि इनके जीवन का यथार्थ संघर्षों से भरा हुआ है। यह अपने जीवन के अंतिम पड़ाव तक आर्थिक संघर्षों से जूझते दिखाए गए हैं। मज़दूरों को इतनी बीमारियों के बाद भी काम करते दिखाया गया है। सभी मज़दूर अनपढ़ हैं तथा क्रेशर मालिकों की कूटनीति समझने में असमर्थ हैं। उपन्यास साहित्य में पात्रों की बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति को दिखाया गया है। डॉक्टर अपने काम को, काम न समझ कर व्यवसाय बना बैठे हैं। डॉक्टर मरीजों को बिना किसी कारण बीमारी का बहाना बनाकर, अस्पताल में रहने को कहते देखे हैं। डॉक्टरों का मानना है कि अगर मरीजों को कमरे में ठहराया नहीं जाएगा तो अस्पताल की बिल्डिंग का खर्च कैसे पूरा होगा? अगर वह ऐसा करेंगे तभी तो उनका अस्पताल आर्थिक वृद्धि करेगा। इसी व्यथा में धन अर्जन की संभावनाएं अधिक हैं। उपन्यास में आर्थिक परिवेश संबंधों में बदलते मूल्यों के लिए ज़िम्मेदार माना गया है। बिना योग्यता, पैसे के बल पर व्यक्ति डॉक्टर के व्यवसाय में आते दिखाए हैं। प्रत्येक व्यक्ति पैसे का पीर बन गया है। भौतिक समृद्धि के कारण व्यक्ति को जीवन और मानवीय संबंधों के प्रति नवीन दृष्टिकोण अपनाने को विवश कर दिया है। पात्र डोनेशन देकर डॉक्टर बन कर आते हैं। व्यक्ति बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति के प्रभाव में अपने आदर्शात्मक मूल्यों का उल्लंघन करने लगा है। जिसके कारण एक गरीब तथा अमीर मरीज को एक ही तराजू में तोला जा रहा है। आज उसी गरीब से बिना मतलब के पैसे वसूले जा रहे हैं। इसका कारण यह है कि जो डॉक्टर उसका इलाज कर रहा है, उसके मन में अपनी पढ़ाई पर लगे पैसा को वसूलने का लक्ष्य बना बैठा है।

उपन्यास का डॉक्टर अपने लक्ष्य की भरपाई एक गरीब मरीज द्वारा करता दिखाया गया है। इस प्रकार उपन्यास में आर्थिक मूल्य के विघटन के कारणों को पात्रों द्वारा दिखाया गया है।

मानव मन की इच्छाएं अनंत होती हैं। अर्थशास्त्र में इच्छाओं को ज़रूरतें, आराम तथा ऐशोआराम में विभाजित किया है। उपन्यास के पात्र अपनी इच्छाओं की पूर्ति गैर ढंग से पूरी करते देखे जा सकते हैं। पात्रों ने अपनी आवश्यकताओं को लूट, चोरी आदि द्वारा पूरी किया है। चोरी तथा लूट को अनैतिक माना जाता है। 'अल्माकबूतरी' उपन्यास में कबूतरा समुदाय चोरी करके ही अपना भरण-पोषण करता है। बच्चों को जन्म लेते ही चोरी करना सिखाया जाता है। अगर चोरी करके कोई व्यक्ति आता है तो समुदाय में उसकी बहुत प्रशंसा की जाती है। इस कबीले में चोरी किये गए सामान का आधा हिस्सा मुखिया को दिया जाता है। यहां पर विवाह भी लड़के की चोरी की काबिलियत को देखकर ही तय किए जाते हैं। अगर लड़के ने बड़ी चोरी की होगी तो उसके विवाह का सारा खर्च लड़की का बाप करता है। इस प्रकार उपन्यास में आर्थिक पक्ष के मूल्य बोध द्वारा मर्यादाओं को पार किया गया दिखाया गया है। पात्रों की कथा द्वारा, गिरते आर्थिक मूल्यों को प्रदर्शित किया है। उपन्यास के राजनीतिक पक्ष के मूल्य बोध में पुलिस प्रशासन की सच्चाई को दिखाया गया है। पुलिस का कर्तव्य बनता है कि वह आम जनता की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहे लेकिन पुलिस कर्मचारी ऐसे हैं कि गरीब व्यक्ति की रिपोर्ट लिखने के लिए नहीं मानते। उनका मानना है कि अगर कोई उच्च वर्ग का व्यक्ति होगा, तभी हम रिपोर्ट लिखेंगे। गरीब व्यक्ति की रिपोर्ट को लिखना अपने समय को बर्बाद करना बताते हैं। लेखिका ने समाज में व्यापक भेदभाव की नीति के संदर्भ में यह स्पष्ट किया है कि समाज का उच्च वर्ग समस्त नैतिक मूल्यों को ताक पर रखकर अपने से निम्न वर्ग के लोगों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। वह अपने अहंकार के कारण राजनीतिक मूल्यों का उल्लंघन करते हैं। यहां तक कि पुलिस कर्मचारी पैसे के बल पर ही कार्य करते हुए नज़र आते हैं। पुलिस प्रशासन अपने कर्तव्य से पीछे हटता हुआ दिखाया है। शारीरिक लिप्सा को भी उपन्यास में राजनीतिक मूल्य विघटन का प्रमुख कारण पाया गया है। प्रत्येक सरकारी कर्मचारी अपनी शक्ति के बल पर अपनी शारीरिक भूख मिटाता है। पुलिस प्रशासन में जनता के हित

की कोई भी बात सामने नहीं आती। कोई भी स्त्री अपने परिवार या समाज से पीड़ित होकर पुलिस के पास अपनी सुरक्षा के लिए आती है लेकिन उपन्यास में एस.आई. से लेकर निम्न पद पर काम करने वाले पुलिस कर्मचारियों द्वारा महिलाओं का शारीरिक शोषण करते दिखाए गए हैं। महिला कॉन्स्टेबल को कोई पुलिस कर्मचारी नहीं पूछता। सब महिला आरोपियों की तलाशी खुद पुरुष कर्मचारी लेते हैं तथा बाद में कपड़े फाड़कर बलात्कार करते हैं। इस तरह उपन्यास में पुलिस प्रशासन की भद्दी करतूतों को दिखाया गया है। राजनीतिक विघटन के लिए सरकारी पदों पर बैठे कर्मचारी ही उत्तरदायी दिखाएं हैं। उपन्यास में शोषित स्त्री का चित्रण किया गया है। कानून व्यवस्था सिर्फ नाम की रह गई है। इसके अंदर झांकने पर कोई और ही रूप देखने को मिलता है। उपन्यास की महिला पुलिसकर्मी भी अंदर के पुलिस प्रशासन को देखकर घृणा अनुभव करती है। अगर वे इसके ख़िलाफ़ आवाज उठाना चाहती है तो उन्हें नौकरी से बाहर करने की धमकी दी जाती है। उपन्यास के चिकित्सा प्रशासन में भ्रष्टाचार का वर्णन किया गया है। भ्रष्टाचार एक बहुत बड़ी सामाजिक और राजनीतिक बुराई है। उपन्यास में भ्रष्टाचार अर्थ की बढ़ती लालसा के कारण हो रहा है। व्यक्ति अधिक से अधिक धन एकत्रित करने के लिए इस राजनीतिक बुराई के चपेट में आता दिखाया है। उपन्यास के पात्र धनवान बनना चाहते हैं चाहे वह धन एकत्रित करने का तरीका नैतिक हो या अनैतिक। मरीजों से अधिक पैसे वसूल किए जाते हैं। मरीज दो-दो सालों से लाइनों में लगे हुए हैं। यहां के मरीज इतने थक चुके हैं कि लेंस महंगा ही मिले लेकिन मिले तो सही। यहां पर संघर्ष केवल गरीब व्यक्ति ही करता देखा गया है। उपन्यास में पैसे के प्रभाव को दिखाया गया है। इस सब चिकित्सा भ्रष्टाचार में डॉक्टर भी शामिल हैं। इतना संघर्ष करने के बाद भी गरीब व्यक्ति अपना इलाज नहीं करवा सकता। अपनी बारी आने पर पता चलता है कि किसी अन्य ने उससे भी अधिक पैसे देकर लेंस को खरीद लिया है। उपन्यास में चिकित्सा जैसे स्थान को भी भ्रष्ट दिखाया गया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने हितों की पूर्ति के लिए दूसरे से धन बटोर रहा है। पैसा ही एकमात्र व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य रह गया है। प्रत्येक डॉक्टर का नैतिक मूल्य अपने मरीज को ठीक करना होता है लेकिन आज परिस्थितियां बिल्कुल विपरीत हो गई है। उपन्यास में अस्पताल के हित की बात की जाती है न कि मरीज के

हित की। लेखिका ने स्पष्ट किया है कि आज का समाज इतना भ्रष्ट हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थों की सिद्धि में लगा है। यहां पर चिकित्सा व्यवस्था सेवा न रहकर पेशा बन गई है। अगर ऐसी ही व्यवस्था रही तो यह असामाजिक तत्वों की शरणस्थली बन जाएगी। यह भ्रष्टाचार मनुष्य को अपराध प्रवृति की ओर अग्रसर करता देखा गया है। जिस व्यक्ति के पास पैसा है, वे आज के समय में प्रत्येक कार्य को आसानी से कर सकता है। चाहे वह कार्य समाज की दृष्टि से अनैतिक हो। यह अनैतिकता ही मूल्य विघटन को बढ़ावा देती दिखाई गई है। उपन्यास में चिकित्सा क्षेत्र में प्रवेश लेने के लिए डोनेशन प्रतिभा पर बलात्कार जैसा अत्याचार माना गया है। मरीजों के साथ हो रहे खिलवाड़ को दिखाया गया है। आधुनिकता के दौर में यह एक प्रचलन बन गया है।

उपन्यास में राजनीति में चुनावों के संघर्ष को विकसित किया गया है। चुनावों के समय गांव का चित्रण किया गया है। प्रधानी का चुनाव है जिसमें गांव की महिलाएं खड़ी होती हैं। समस्त उपन्यास साहित्य में पात्र वोट मांगते हैं तथा वोट अपनी योग्यता के आधार पर नहीं बल्कि उम्मीदवारों द्वारा जनता को दिए गए उपहारों के अनुसार दिए जाते हैं। लोगों को शराब तथा मीट का सेवन करवाया जाता है ताकि पुरुष लोग खुश होकर अपनी वोट उन्हें दें। औरतों को उनकी मेकअप का सामान बांटा जाता है। बूढ़ी औरतों को उनकी बीमारियों को दूर करने के लिए दवाइयां भी दी जाती हैं। समस्त उपन्यास साहित्य में पैसे को पानी की तरह बहाया जाता है। आज की राजनीति पर भी उपन्यास के माध्यम से प्रकाश डाला गया है। राजनीति में व्यक्ति को नहीं बल्कि उम्मीदवारों द्वारा खिलाने-पिलाने के सामान को देखा जाता है। उपन्यास में दिखाया है कि जिस व्यक्ति के पास पैसा नहीं है वह राजनीति में आने की सोच भी नहीं सकता है। राजनीति का प्रचार रिश्वत देकर होता है। यह रिश्वत किसी भी रूप में हो सकती है। उपन्यास में चुनावों के प्रचार को किसी शादी से कम नहीं माना है। एक ही पंचायत की तीन-तीन महिलाएं उम्मीदवार के रूप में खड़ी होती हैं। इस तरह सभी पात्रों में प्रेम समर्पण की भावना लुप्त होती दिखाई गई है। सभी एक-दूसरे को हराने के लिए कई तरीकों से वोट मांगती हैं। उम्मीदवार जनता को अपने-अपने तरीके से लुभाने लगे होते हैं। उपन्यास की महिला उम्मीदवार स्वयं

को किसी उच्च पदवी पर पहुंची हुई मानती हैं। बड़े बुजुर्गों के पांव तक नहीं छूती हैं। सिर्फ सिर हिलाकर नमस्ते करती दिखाई गई हैं। इस प्रकार लेखिका ने आज की राजनीति में आई महिला उम्मीदवारों के व्यवहार को प्रदर्शित किया है। चुनावों के प्रचार में शराब पिलाई जाती है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े होते हैं। एक-दूसरा व्यक्ति, विरोधी पार्टी को देखना पसंद नहीं करता है। उपन्यास में वर्तमान राजनीति में हो रही धांधली को व्यक्त किया है। उपन्यास में वोट देना, कोई धार्मिक पुण्य नहीं माना गया है बल्कि वोट देना तथा वोट लेना एक आर्थिक लाभ को सम्मुख रखकर होता है। लोगों में नैतिकता का भी पतन हो रहा है। चुनाव वाले दिन लोगों को आने के लिए गाड़ियां भेजी जाती हैं ताकि लोगों को आने-जाने में परेशानी का सामना न करना पड़े। यह सब चुनावों के समय वोट बटोरने का एकमात्र ढोंग है। चुनाव जीतने के बाद उम्मीदवार सब कुछ भूल कर अपने स्वार्थों की पूर्ति करने में लग जाते हैं। उपन्यास में धोखाधड़ी का भी चित्रण मिलता है। व्यक्ति अपने कार्य को करवाने के लिए अनुचित ढ़गों के प्रयोग करते देखा गया है। यहां के लोग जब विभिन्न मानवीय सुविधाओं के लिए सभ्य समाज से कुछ उम्मीद करते हैं तो उन्हें वहां की अनैतिकता, अमानवीय भावों से भरे भ्रष्ट आचरण का सामना करना पड़ा है। पात्र अपने नज़दीक के रिश्तों में भी धोखा करते दिखाए गए हैं।

वर्तमान समय की स्थिति भी ऐसी ही है। आज के रिश्तो में प्रेम, आपसी लगाव लुप्त होता जा रहा है। सभी लोग स्वयं के भविष्य को सुधारने में लगे हुए हैं। सरकारी पद पर आसीन व्यक्ति अपनी तनख्वाह के अतिरिक्त अवैध कार्य करने में लगे हैं। सुरक्षा के लिए तैनात व्यक्ति भी धोखाधड़ी के कामों को करते दिखाए गए हैं। उपन्यास का पात्र अपने विभाग में ईमानदारी से कमाए गए धन से असंतुष्ट देखा गया है। व्यक्ति के अंदर धोखा इतना समा गया है कि वह इसके चंगुल से बाहर नहीं निकलना चाहता। अवैध कार्यों में व्यक्ति ने इतना लाभ कमाया है कि वह उसी कार्य को लेकर अपने भविष्य को तय करना चाहता है। उपन्यास साहित्य में भरपूर गैर कानूनी कार्य का वर्णन मिलता है। उपन्यास साहित्य के सभी पात्र धोखे वाले नहीं है, कुछ पात्र मूल्य विकास में भूमिका निभाते देखें गए हैं। वहीं पर कुछ पात्र शशिरंजन जैसे ऐसी बुराइयों को दूर कर राजनीतिक मूल्य प्रचार-प्रसार में भी सहायक हैं। अंततः कहा जा सकता

है कि उपन्यास साहित्य में अधिकतर पात्र राजनीति में धन की लालसा के लिए आते दिखाए गए हैं। कोई भी व्यक्ति राजनीति में जनसेवा के उद्देश्य से नहीं आता। अर्थ की अंधी दौड़ में शामिल होकर वे इंसानियत और मानवीयता जैसे मूल्यों का क्षरण करते दिखे हैं। वह साथ ही स्वार्थपरकता, पदलोलुपता और भ्रष्टाचार के कारण पात्रों द्वारा मूल्यों में विघटन उत्पन्न हुआ है। चाहे राजनीतिक तौर पर भारत आज़ाद है परंतु आर्थिक स्तर पर आज भी गुलाम है। मूल्यों का अवमूल्यन व्यक्ति को गिरा चुका है। इस तरह उपन्यास में धार्मिक तथा सांस्कृतिक पक्ष का मूल्य बोध में पात्रों की धार्मिक आस्था को व्यक्त किया है। लोगों की भगवान पर अटूट आस्था व्यक्त की है। उपन्यास के पात्रों का प्रत्येक कार्य, विचार, धर्म तथा रीति पर आधारित है। उपन्यास में विवाह में विदाई के समय गंगा मां पर आस्था व्यक्त की है। गंगा मां को पात्रों द्वारा प्रणाम किया जाता है तथा अपनी गलतियों के लिए क्षमा याचना का दृश्य देखने को मिलता है। यहां ज्ञान के आधार पर ही औरतें अपने धर्म का पालन करती हैं। यहां पर धर्म के प्रति प्रेमभावना, विश्वास, आस्था से भरे परिवेश का वर्णन किया गया है। मनुष्य चाहे दुख में हो या सुख में, हर हालत में ईश्वर को याद करता है। धर्म को सामाजिक संबंधों से जोड़ दिया है। उपन्यास के पात्र ईश्वर या भक्ति के बिना किसी भी कार्य को सफल नहीं मानते हैं। इनका मानना है कि ईश्वरीय आशीर्वाद के बिना हम किसी भी कार्य की उन्नति के पथ पर नहीं पहुंच सकते। प्रत्येक पात्र अपने-अपने ढंग से ईश्वरीय भक्ति में लीन है। भारतीय हिंदू समाज में विभिन्न देवी-देवताओं पर आज भी ऐसी ही धार्मिक आस्था बनी हुई है। उपन्यास में एक ही धर्म की मान्यताओं का वर्णन हुआ है। हिंदू देवताओं की पूजा पद्धति देखने को मिलती है चाहे वह विवाह संस्कार के पहले का वर्णन हो या बाद का या फिर भविष्य की मंगलकामना हो। सभी दृष्टि से धार्मिक मूल्य विकसित होते ही नज़र आए हैं। भगवान राम की शक्ति पूजा का भी जिक्र मिलता है। विपत्तियों से घबराना नहीं चाहिए बल्कि उनका दृढ़ता से सामना करना चाहिए। बऊ और चीफ़ काका दोनों विभिन्न धर्मों से संबंध रखते हैं लेकिन दोनों में कोई भी वैचारिक मतभेद नहीं है। दोनों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सहानुभूति आदि की भावना देखने को मिलती है। कथा में सुंदरकांड की चौपाइयां का वर्णन हुआ है। यह सुनकर पात्र एक-दूसरे को हिम्मत बंधाते हैं। धर्म

के उस रूप का वर्णन मिलता है जो कि व्यक्ति को अन्याय के विरुद्ध लड़ना सिखाता है। लोगों की धार्मिक आस्था व्यक्ति को अत्याचारों से बचाती है। धार्मिक आस्था को अपने जीवन में बनाए रखना ही मूल्य विकास के लिए सहायक सिद्ध हुआ है। धर्म ही हमें बताता है कि यह कार्य उचित है या अनुचित। अनुचित कार्य व्यक्ति को अधर्मी तथा पापी बनाता हुआ दिखाया गया है। उपन्यास में परित्यक्ता पत्नी में सेवाभाव को देखा गया है। शीलो मायके में न जाकर सास की सेवा करना अपना धर्म समझती है। यहां पर परंपरागत धार्मिक मूल्य का वर्णन मिलता है। यहां पर रामायण की उर्मिला के जीवन जैसा तथ्य मिलता है। अतिथियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य माना गया है। परोपकार भी सेवाभाव का भाग है। दूसरों का उपकार करना उपन्यास में कई जगह प्रस्तुत किया गया है। जिसका निरंतर रूप से विस्तार हुआ है। कोई भी पात्र ऐसा नहीं है जो कि धार्मिक मूल्यों में सेवाभाव का उल्लंघन करता है। चाहे यह सेवाभाव किसी भी कारण व्यक्ति के अंदर उपजा है लेकिन सामान्य रूप में पात्रों के चरित्र में दिखाई देता है। सुगंधित चीजों जैसे क्रीम, पाउडर, तेल और इत्र से संबंधित अंधविश्वास प्रचलित हैं। लोगों में कई स्थानों पर जाने से मना है क्योंकि उनकी मान्यता है कि वहां पर जाने से भूत-प्रेत लग जाते हैं। इस तरह उपन्यास में समय के साथ-साथ लोगों के अपने अन्य अंधविश्वास बन गए हैं। उपन्यास में मानसिक रोग के मरीज का इलाज भी तन्त्र-मंत्रों से किया जाता है। महामारी से बचने के लिए भी टोने-टोटके किए जाते हैं। इस तरह के वातावरण में लोग रहेंगे तो उनकी मानसिकता भी उसी तरह की होगी।

लोकगीतों का भी विवेचन विविध रीति-रिवाजों का वर्णन करने के लिए किया गया है। सांस्कृतिक मूल्यों में लोकगीतों तथा परंपरा से चले आए त्योहारों का वर्णन किया है। व्यक्ति के रीति-रिवाजों और व्यवहारों का संबंध संस्कृति से है। रीति-रिवाज़ जीवन में सांस्कृतिक गरिमा के परिचायक हैं। विवाह के समय गाए जाने वाले लोकगीतों का वर्णन मिला है। विभिन्न तरह की रस्मों को लोक गीतों के माध्यम से वर्णित किया गया है। उपन्यास में 'सुआटा' वीरगीत का भी वर्णन मिलता है। इस गीत की विशेषता है कि यह लड़कियों द्वारा ही गाया जाता है। इस लोकगीत से बुंदेली आंचलिक पर्व की समृद्ध लोक कला की झलक साफ दिखाई देती है। यह बुंदेलखंड में गाए जाने वाले लोकगीत हैं। परंपरागत

सांस्कृतिक मूल्य में वहां के रहन-सहन तथा त्योहारों का वर्णन किया गया है। लोगों के रहन-सहन में अंतर को व्यक्त किया गया है। होली, दिवाली आदि त्योहारों का वर्णन किया है। उपन्यास के पात्र इन त्योहारों को मना कर परंपरा को जीवित रखते हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक मूल्य व्यक्ति को अपने समाज तथा संस्कृति से जोड़ने का काम करते हैं। यह व्यक्ति को सभ्य, सुचेत तथा सुसंस्कृत बनाते हैं। उपन्यास साहित्य में विभिन्न उत्सवों से संबंधित लोकगीत गाए गए हैं जो कि वहां की रीति-रस्मों को व्यक्त करते हैं। विविध परंपरागत पर्वों, उत्सवों, पहनावे, रहन-सहन आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। लोगों की भोजन श्रृंखला को भी बताया है। लेखिका के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां हम अपनी संस्कृति को सर्वोत्तम बनाने का प्रयास करें। तभी भारतीय लोग अपनी संस्कृति से जुड़े रह सकते हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों में बुंदेलखंडी तथा ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने इस भाषा को इसीलिए माध्यम बनाया है क्योंकि यह दोनों भाषी क्षेत्रों में रही हैं तथा इन्होंने यहां के लोगों को ही उपन्यास के पात्र बनाया है। यह बात स्वाभाविक ही है कि जहां के पात्र होंगे, वह अपनी क्षेत्रीय भाषा का ही प्रयोग करेंगे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति जिस स्थान पर रहता है उसे वहां की नमी या वस्तुओं से प्रेम होना स्वाभाविक है। यही कारण रहा है कि मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में बुंदेलखंडी तथा ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। 'विज़न' उपन्यास में शहरी परिवेश होने के कारण अंग्रेजी भाषा के अधिकतम वाक्यों का प्रयोग किया है। मुहावरे तथा लोकोक्तियों का भी समयानुसार भरपूर प्रयोग हुआ है। विविध शैलियों का समावेश उपन्यास साहित्य में देखने को मिलता है। 'विज़न' तथा 'झूलानट' उपन्यासों में फ्लैशबैक शैली का प्रयोग हुआ है। भाषा तथा शैली की दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास संपन्न हैं। उपन्यास में ऐसी रोचकता है कि उपन्यास की समाप्ति के बाद भी पाठक उसके बारे में ही सोचता रहता है। यही इनके उपन्यास साहित्य की सफलता है। इनकी भाषा में विद्रोह का स्वर विद्यमान है। इनके उपन्यासों में यथार्थ की अनुभूति है। इन्हीं विशेषताओं के कारण मैत्रेयी पुष्पा एक सफल उपन्यासकार मानी गई हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्पा की भाषा में पाठकों को रचना से बांधे रखने की ताकत विद्यमान है।

शोध प्रबंध की उपलब्धियां:- शोध प्रबंध की उपलब्धियां आगे इस प्रकार व्यक्त की गई हैं:-

1.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य के पात्र वैयक्तिक मूल्य के द्वारा समाज में बदलाव लाना चाहते हैं। वैयक्तिक मूल्य में सामाजिक हित को सम्मुख रखा गया है। उपन्यास में एक बूढी प्रिंसीपल अपने शिष्य से शादी कर लेती है लेकिन यह तथ्य मेरे अनुसार समाज को बुराई की ओर न लेकर लोगों को जागृत करता है ताकि लोग अपनी व्यक्तिगत इच्छा को पूरी कर सकें। उस समय लोगों की इस तरह की मानसिकता पर पूरा समाज थू-थू करता था लेकिन लेखिका ने लोगों के हित के बारे में भी हमें सोचने पर मज़बूर किया है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास की रचना आज के समय में अधिक तालमेल बिठाती नज़र आई है।

2.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में विघटित तथा प्रसारित होते दांपत्यगत तथा पारिवारिक मूल्यों को चित्रित किया है। ऐसा नहीं है कि मूल्य टूट ही रहे हैं, टूटने के साथ विकसित भी होते देखे गए हैं।

3.मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में परंपरागत मूल्यों का पालन किया गया है। शादी को एक संस्कार के रूप में देखा जा सकता है लेकिन आज समाज में ऐसी दशा बहुत कम देखने को मिलती है। इसी पक्ष में दूसरी तरफ आज की स्थिति की तरह ही उपन्यास में शादी को एक समझौता बनते भी देखा गया है।

4.नारी जीवन से संबंधित नई मान्यताएं साहस, चेतना के दर्शन होते हैं। फ़रिश्ते निकले' उपन्यास में बहु की माँ अपने साहस के बल पर जीवन व्यतीत करती नज़र आई हैं।

5.अर्थ से आत्मनिर्भर नारी के सम्मान का चित्रण हुआ है। 'गुनाह बेगुनाह' की इला चौधरी इसका सर्वश्रेष्ठ उदहारण है।

6.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित उच्च जातियों, पूंजीपति एवं उच्च वर्ग से निम्न वर्ग आतंकित एवं शोषित है।

7.उपन्यास के पात्रों को अपने क्षेत्र से प्रेम है। वह अपनी अनगढता, सीधापन छोड़ना नहीं चाहते। यह स्थिति आज भी हमें अपने घर के बड़े-बूढों में देखने को मिलती है।

8.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में सरकारी कार्यालयों में आसीन व्यक्ति के भ्रष्ट व्यवहार का वर्णन हुआ है। राजनेताओं की मान्यता को भी दिखाया है।

9.उपन्यास के पात्रों की भगवान पर अटूट आस्था को चित्रित किया है। सबसे अलग बात यह है कि डॉक्टर भी अपनी साईस से अधिक भगवान पर विश्वास करते देखे गये हैं।

10.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में बड़े बुजुर्गों का आदर, मान-मर्यादा, परोपकार, सहृदयता जैसे आदर्श मूल्यों का समर्थन किया है।

11.लोकगीतों के प्रयोग द्वारा सांस्कृतिक मूल्य बोध करवाया है।

12.मैत्रेयी पुष्पा के समग्र उपन्यास साहित्य में लोकोक्तियां तथा मुहावरों आदि का प्रयोग हुआ है।

13.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्थानीय बोली एवं आंचलिक भाषा का प्रयोग प्रसंगानुरूप है जिसका प्रमुख कारण अपने प्रदेश से मोह को दर्शाता है।

शोध कार्य की नई दिशाएं:- शोध कार्य की अपनी सीमाएं हैं। शोध कार्य के बाद जो नए विषय सामने आए हैं उस पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पा के समग्र साहित्य पर स्वतंत्र रूप से निम्नलिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है:-

1.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में सामाजिकता

2.मैत्रेयी पुष्पा के आंचलिक उपन्यासों में चित्रित लोगों का जीवन तथा संस्कृति

3.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

4.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य का अनुशीलन।